

आशा री एक नौई उमीद



Bangani

आशा री एक नौई उमीद

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-

NLCI

बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

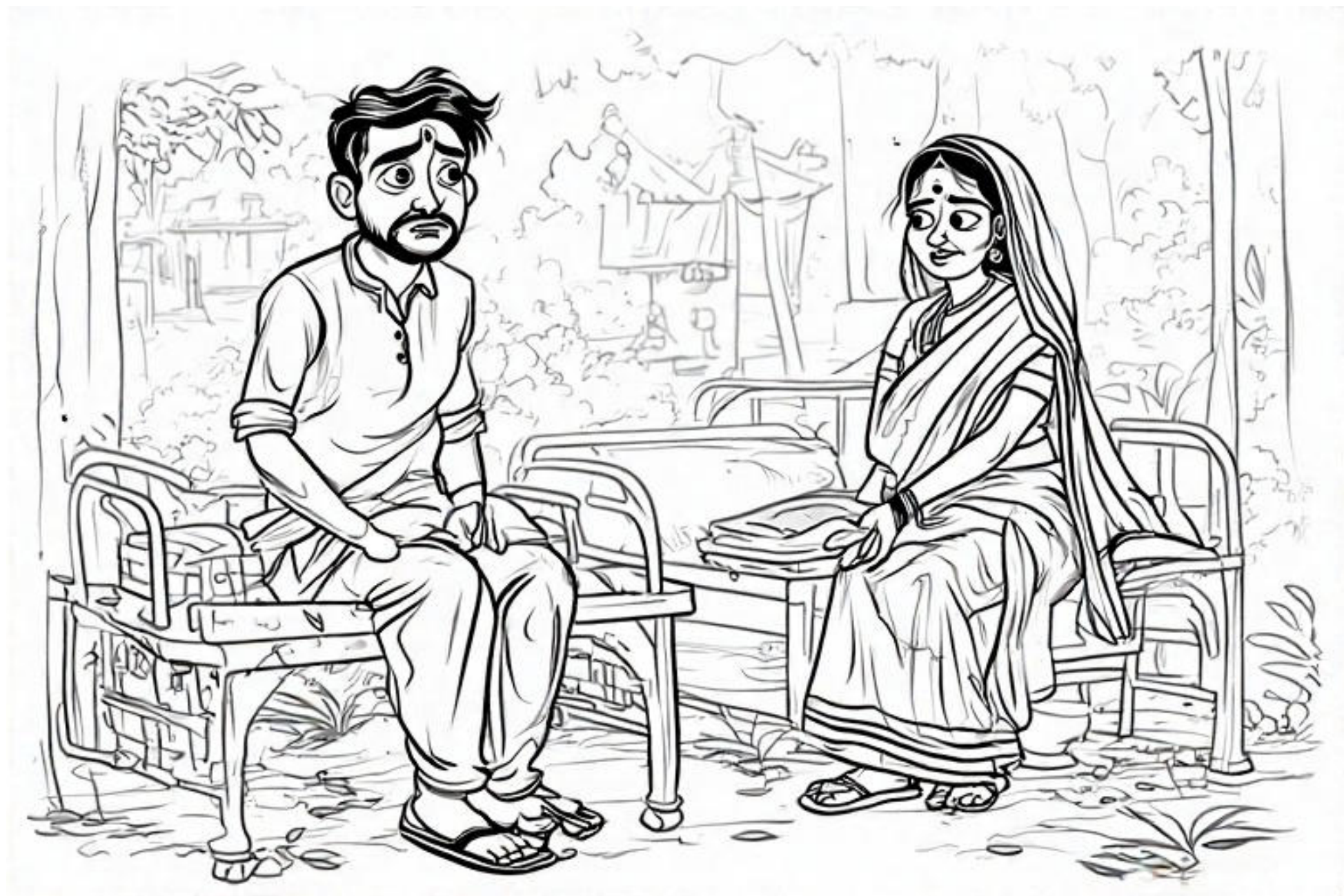
॥धन्यवाद॥



एक छोटौ ज़ाई गाउँ दि रमेश औज़ि तेसरी
छेउड़ सीमा रौयैण थै। रमेश एक ट्रक
डाइवर थौ औज़ि सेउ मीनौउं ज़ौउं गौरै कौइ
दुरै रौयै थौ।



कुछ बौत्तै बासियै रमेश बीमार उन्दै लागौ ।
औगौणिकै तेस औळखै बुखार आन्दै लागै,
औज़ि कमज़ोरी बी बौड़दि लागी । गाउँ रौ
डौक्टर रै इलाज़ कौरणै बासियै बी कुछ
सुदार ना उवौ ।



सीमा बी बौरी चिन्ता कौरदि लागी । तियै
रमेश शैर रै बौड़ौ औस्पताल दि गिणौ,
तेत्कै डौक्टरुं तेसरौ टेस्ट कियौ, जौ
रिपोट आइ तै डौक्टरेइ बोलौ कि रमेश
एचआईवी पौजिटिव ।



सीमा बौरी गौबराइ । तियै एचआईवी रै बारे
दि शुणौन्दौ तै औस्ती थौ पर तेसरै बारेदि
पुरौ सौच ना जाणै थी। तिकै एशौ लागौ कि
यै कोइ लाइलाज बीमारी, ऐबै रमेश रौ
बौचणौ मुश्किल औइ सौकै।



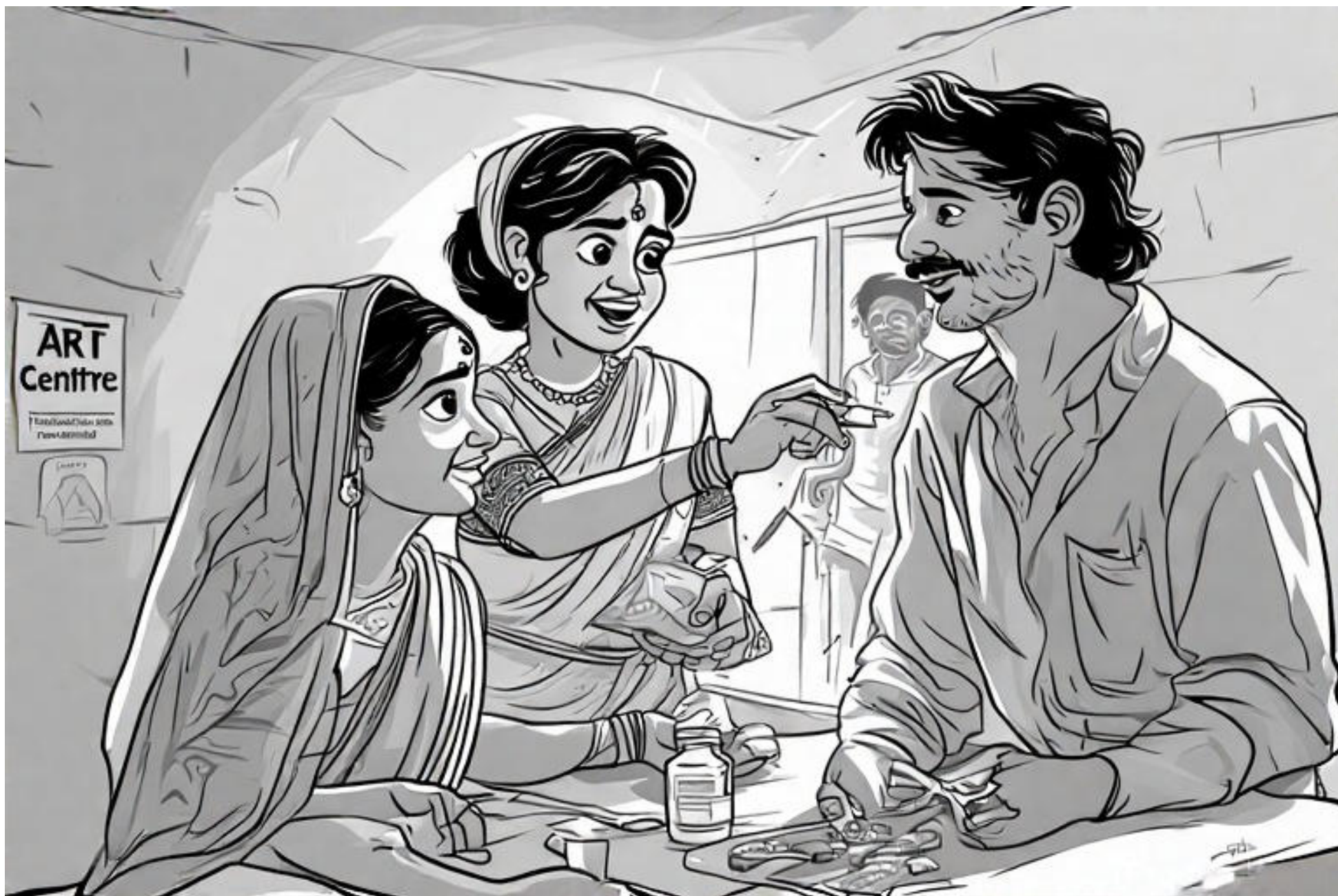
गाउँ वाळौं कै जौ पौतौ लागौ, तै सै लोग
रमेश औजि सीमाइ नफरत री नज़र कौइ
देखदै लागै। सै एती नफरत कौरदै लागी गोए
थै कि तिउँखि राशन-पाणि देणनौ बी बन्द
कौरी गोऔ थौ।



सीमा कै कुछ बी सौमज ना रौ थौ आन्दै
लागी कि एबै का कौरु। तैबै गीता, सै एक
आशा थी, जुण गाउँ दि काम कौरै, सै तिउँरै
गौरेदि आई औजि सै सौमजायै कि
एचआईवी कोई श्राप ना नौथि, बौल्कि ऐ
एक बीमारी, ईरौ इलाज औस्ती।



गीताइ तिउंवारी एआरटी (एंटी-रेट्रोवायरल
थेरेपी) रै बारे दि बोलौ। गीताइ सै सौमज़ायै
कि सौइ दुवाइ खाणै कौइ रमेश बौड़िया
ज़िन्दगी ज़ी सौकै।



सीमाइ बौड़ी हिमत कौइ रमेश एआरटी सेंटर
खी गिणौ, तेत्कै रमेश खी दुवाइ देणी, औज़ि
बोलौ कि बौत्तै बौत्ते दि एसखि दुवाइ दै लै
तै एसरी सेहत दि सुदार औयै लौ।



तेबै आराम आराम कौइ रमेश री तबियेत दि
सुदार आन्दै लागौ। सीमाइ बी आपड़ौ टेस्ट
कौराओ, सै एचआईवी निगेटिव थी। डौक्टरुं
सै सौमज़ाइ कि सै आणै वाळौ बौक्ते दि
सुरक्षित केशौ रौइ सौकै।



सीमाइ औज़ि रमेशेइ गाउँ वाळै एचआईवी रै
बारे दि जागरूक कौरनौ शुरू कियौ। तिउँ
बोलौ कि ऐ बीमारी छूणै कौइ, औज़ि साथी
साथ खाणै-पीणै कौइ या एक साथ रौणै कौइ
ना फैलदी।



आराम आराम कौइ गाउँ वाळौउँ रौ चाल
चौळण बौदलुन्दै लागौ, तिउँ महसूस कियौ
कि आमारी बेवकुफी री बौजै कौइ आमै
रमेश औज़ि सीमा कौइ दुरै उवै। ऐबै सै
तेसरै साथै औगौणिकै रै बाशी व्यवहार
कौरदै लागै।



रमेश औज़ि सीमाइ एबै एशौ तय की गोऔ
थौ कि आमै एचआईवी जागरूकता
अबियान रौ एक ईसौ बौणिण। ताकि कोई
ओर ई बीमारी औज़ि बेदबाव रै शिकार ना
बौणै लै। ऐबै सै आशा री एक नौई उमीद
बौणी गोइ थी।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे कि बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....

